IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

रामधारी सिंह 'दिनकर' के काव्य में चित्रित सामाजिक परिवेश

डॉ. प्रवीण देशमुख
सहयोगी प्राध्यापक व हिंदी विभाग.प्रमुख
गुलाम नबी आजाद कला वाणिज्य व विज्ञान
महाविद्यालय बार्शीटाकलीए जिला.अकोला
महाराष्ट्र .444401

सारांश

हिन्दी साहित्य में आधुनिक युग के काव्यधारा में रामधारी सिंह दिनकरजी का समग्र साहित्य ही उच्च कोटि का साहित्य रहा हैं उसमें जनमानस मुख्य केंद्रबिंदु में रहा हैं । समाज का हर घटक श्दिनकरजीश के साहित्य में दिखाई देता हैं उन्होंने बड़ी ईमानदारी से समाज में फैलते भ्रष्टाचारए अनैतिकता तथा आपस में द्वेष का कडा विरोध दर्शायाा भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता को लेकर फिर वह श्संस्कृति के चार अध्यायश हो या महाभारत को लेकर श्कुरुक्षेत्रश होा आधुनिक हिन्दी साहित्य में क्रांतिकारीए राष्ट्रीय एवं विद्रोही स्वर केवल हिन्दी जगत तक ही सिमित न रहते हुए उसकी गूँज समग्र सृष्टि में गूँज उठीा राष्ट्रीयताए देशभक्तिए देशप्रेमए मानवतावादी दृष्टिकोण उनके साहित्य की प्रमुख गूँज रही है ।अन्याय एवं अत्याचार से सामना करने के लिए वह जनता में साहस पैदा करते है । उनके अनुसार किसी भी व्यक्ति को कतई यह अधिकार नहीं की वह दूसरे व्यक्ति का शोषण करेंए उसके अधिकारों का हनन करेंा गरीबए असहायए दीन.दुखियों में साहस बाँधने का काम किया जिससे उनमें यह अहसास निर्माण किया की मजबूरी में भी किसी के सामने भयवश झुकने की जरुरत नहींा अर्थात उनके सन्दर्भ में यह स्पष्ट रूप से कह सकते है किए कवि रामधारी सिंह श्दिनकरश विशेष रूप से अपनी ओजमयी व प्रभावशाली रचनाओं के माध्यम से केवल हिन्दी साहित्य जगत में ही हलचल मचायी बल्कि यथार्थ परक रचनाओं से यथार्थ के धरातल पर भी उनका साहित्य अपना प्रभाव सिद्ध कर चुका हैा इसमें कोई दोराय नहींा कवि.कर्म की सफलता को प्राप्त कर श्दिनकरश का साहित्य तत्कालीन समय में भी और आज भी प्रासंगिक हैा उनकी ऐसी ही अनूठी एवं विशिष्ट रचनाओं के माध्यम से आज भी याद किया जाता हैा

कुंजी शब्द रू. **राष्ट्रीयताए देशभक्तिए देशप्रेमए मानवतावादी दृष्टिकोणए सामाजिक परिवेश**

प्रस्तावनारू.

युगीन परिस्थितियोंए परिवेश का व्यक्ति पर प्रभाव होता हैा फिर चाहे वह व्यक्ति सामान्य हो या असामान्या परिस्थितियाँ उसे अपने प्रभाव से प्रभावित करती हैंा कुछ व्यक्ति होते हैं जो परेशानियों कोए समस्याओं को अपने भीतर ही दबा लेते हैंए उन पर कुछ कहते नहीं किंतु कुछ ऐसे भी व्यक्ति होते हैं जो कभी खुलकर कहते हैा साहित्यकार पहले परिस्थितियों कोए उन सारी स्थितियों को पहले जीता हैए उसके बाद साहित्य द्वाराए अपनी विशिष्ट शैली द्वारा उसका निरूपण करता हैंा साहित्यकार का प्रमुख लक्षण होता है किए वह अपने साहित्य द्वारा लोक कल्याण एवं समाज हित में हो ऐसे साहित्य का सृजन करेंा नवनिर्माण करेंा अर्थात

साहित्यकार का यह दायित्व होता है कि उसके लेखन द्वारा प्रत्येक जीवन को लाभ हो सके। हिंदी साहित्य.चिंतन की परंपरा भारतीय चिंतन परंपरा का एक अंश है जो मुख्यतः अत्यधिक समृद्ध एवं प्राचीन है।

रामधारी सिंह श्दिनकरश आधुनिक हिंदी साहित्य के क्रांतिकारीए राष्ट्रीयए विद्रोही एवं ओजस्वी कवि हैं। श्दिनकरश के काव्य.चेतना का केंद्रबिंदु वर्तमान के प्रति सजगए प्राचीन एवं आध्यात्मिक आदर्शों के प्रति सहिष्णु तथा नए युग के आगमन में पूर्ण आस्था रखती हैं। जैसे ष्दिनकर वास्तव में दाह के कवि हैं किंतु उनकी प्रकृति को मात्र जलन स्वीकार नहींए यह अवश्य हैं कि दाह से दूर रहने के बाद भी उसकी लौ उनके पास ही रह जाती है और यदा. कदा प्रकाशमान हो उठती है। जिस प्रकार **सीता के नूपुरों को भय है कि कहीं ये पैर हमें छोड़ न देंए उसी प्रकार दाह भी दिनकर के रागात्मक चित्त का ध्यान कर भयभीत रहता हैं**ष 1 श्दिनकरजीश क्रांति के ज्वलंत रूप हैं जिनमें स्वतंत्रता के पूर्व का क्रांतिकारी रूप तथा राष्ट्रीयता के स्वर से ओतप्रोत है तथा स्वतंत्रता के बाद की दयनीय अवस्थाए अत्याचार एवं सामाजिक विषमताए पीड़ित जनता के दुख दर्द के प्रति क्षोभ से भरपूर क्रांतिकारी स्वर है। दिनकरजी श्चक्रवाकश की भूमिका में लिखते हुए कहते हैं ष**मेरी कविता के भीतर जो अनुभूतियां उतरी वे विशाल भारतीय जनता की अनुभूतियां थींए वे उस काल की अनुभूतियां थीं जिसके अंक में बैठकर मैं रचना कर रहा था। कवि होने की सामर्थ्य मुझमें शायद नहीं थी। यह क्षमता मुझमें भारतवर्ष का ध्यान रखने से जागृत हुई। यह शक्ति मुझमें भारतीय जनता की आकुलता को आत्मसात करने से स्फुरित हुई**ष 2 राष्ट्रीय प्रेम की लहराती अँगड़ाइयों को कवि देश में दूर.दूर तक कोने.कोने में भर देना चाहता है। कवि स्वयं विषपान कर विश्व को मंगलमय संदेश देता रहा हैं। भारतीय जनता को मुख्यता परतंत्र की बुराइयों से भली भांति परिचित कराते हुए इस बात को समझाने का अथक एवं महत्वपूर्ण प्रयास किया कि परतंत्र देश के रक्त का पान करती है तथा मानवता को दबा कर खा जाती है। जैसे.

ष्यह है परतंत्रता देश का रूधिर पीने वाली
मानवता कहता तू जिसको उसे चबाने वालीष 3 ;सामधेनीद्ध

श्दिनकरश जी का समग्र साहित्य ही भारतीय संस्कृति के गौरवमय अतीत के वैभवशाली कगारों को सिक्त करती हुई प्रवाहित हुआ हैं एवं वर्तमान में जो विषमताओं से विक्षुब्ध होकर उन्होंने शौर्य की शिक्षा भी दी हैं। उनका मानना है कीए कठिन परिश्रमए कड़ी मेहनत करने के बावजूद भी कृषक के बच्चों को ठीक से दूध नहीं मिलताए कितनी दुर्भाग्य की बात हैं । कैसी विपरीत परिस्थिति है तो दूसरी ओर उनकी कमाई पर ऐश करनेवाले अपने जानवरों को ममता और अपनत्व तथा आराम देकर पालते हैं ।

ष श्वानों को मिलता दूध वस्त्र
भूखे बालक अकुलाते हैं ।
माँ की हड्डी से चिपक ठिठुरए
जाड़े की रात बिताते हैं ष4

इससे तात्पर्य यहीं हैं किए समाज में जिन्हें जिस चीज की आवश्यकता होती हैंए उन्हें वह दूर्लभ होती हैं। उपलब्ध नहीं होती और वही दूसरी तरफ समाज के गिने.चुने लोग उन चीजों को अपने जानवरों पर खर्च करा देते हैं । यही हालात जो श्दिनकरश जी के समय थेए वह आज भी जहाँ हम तीसरी महासत्ता बनने का या होने का जो दम्भ भरते हैंए वहां बने हुये है। यह बड़ी व्यथा हैं। श्दिनकरश ग्रामीणों की क्षुधाए अर्धनग्न अवस्थाए ऋण का बढ़ता बोझ तथा धनपतियों के क्रूर व्यवहार के सन्दर्भ में अपने विचार अपनी महत्वपूर्ण रचना श्कविता के पुकारश में व्यक्त करते है । श्दिनकरश अपनी रचनाओं में पूरी तरह से श्सत्यश पर बल देते हुये दिखाई देते हैं । श्परशुराम की प्रतीक्षाश में कवि दिनकरजी हमें सत्य का आग्रह व्यक्त करते हुये दिखाई देते हैं । जो इसप्रकार हैं .

ष जो सत्य जानकर भी न सत्य कहता हैए
या किसी लोभ के विवश मूक रहता हैए
उस कुटिल राजतंत्री कर्दम को अधिक है ।
यह मूक सत्यहन्ता कम नहीं बाधिक है । ष 5

अर्थात दिनकर जी सत्य को अधिक महत्व देते हैए जो समाज के हित के लिए आवश्यक है । दिनकर जी अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय संस्कृति के मूल तत्व श्निष्काम कर्मश को प्रस्तुत करते हुए आधुनिक मानव को एक नया मार्ग दिखाने का प्रयास करते हैं। वास्तविकता यह रही है किए आधुनिक युग में व्याप्त विषमताओं का

मूल कारण मानव की मानसिक संकीर्णताए उसकी स्वार्थपरक मनोवृत्ति हैं। जब तक मानव इस संकीर्णता में बंद रहेगाए जब तक वह अपना तथा अपने परिजनों के लिए जीता हैंए तो निश्चित उसका जीवन परिपूर्ण नहीं होता । जब वह इस सिमित दायरे से परे निकलकर अपनी सोच को व्यापक स्तर प्रदान करेगा तभी मानवता के उच्चदर्शो के अनुकूल होगा । सही मायनों में देखा जाए तो वास्तव में मानव जीवन की पूर्णता इसी में निहित होती हैंए कि मनुष्य अपने लिए नहीं बल्कि दूसरों के लिए जिएए अपने लिए तो जानवर भी जीते हैंए उसमें और हम में फर्क होता हैं । यही वास्तविकता में सच्चे अर्थों में निहित राष्ट्रीयताए देशभक्ति एवं सबसे महत्वपूर्ण नैतिकताए मानवतावादी दृष्टिकोण सिद्ध होगी। श्दिनकरजीश को यही अपेक्षित है। हमारी भारतीय संस्कृति भी मानव को यही आदर्श प्रदान करती हैं किए मनुष्य स्वकेन्द्रित न रहते हुये वह दूसरों के लिए जीवन जिए । अर्थात सच्चे अर्थों में श्सर्वजन हितायश हो । जैसे श्दिनकरश अपने काव्य श्रश्मिरथीश में कर्ण के पात्र के माध्यम से मित्रता को प्रमुख स्थान प्रदान करते हुए उसकी एक मिसाल उपस्थित करते हैंए जिससे समाज में मित्रता के माध्यम से सही सन्देश पहुंचे । वह इस सन्दर्भ में कहते है .

मित्रता बड़ा अनमोल रत्नए कब इसे तोल सकता है धन।
धरती की तो है क्या बिसात। आ जाए अगर वैकुण्ठ हाथए
उसको भी न्योछावर कर दूँए कुरूपति के चरणों पर धार दूँ ए्श6

इससे तात्पर्य यह हैं कि मित्रता एक ऐसा रिश्ता है जो सारे रिश्तों से अलग है। मित्रता का निर्वाह करना सृष्टि के हर एक मानव का परम कर्तव्य होता हैंए और इसे पूरा करने में या निभाने में उसे चूकना नहीं चाहिए। और यही वास्तव में उसका मानव धर्म होता है । कर्ण के जरिए कवि आधुनिक मानव के कर्तव्यों की ओर इंगित करते हैं। मानव जीवन को सार्थक बनाने के लिए यह अधिक महत्वपूर्ण और तथ्यपूर्ण हैं । किन्तु दुःख इस बात का है किए आधुनिक मानव अपने कर्त्तव्य और वचन से विमुख होता जा दिखाई देता हैंए वह पलायन करता हुआ दिखाई देता है। इसलिए दिनकर जी श्रश्मिरथीश के माध्यम से कर्ण के चरित्र के आधार पर कर्तव्य पालन की ओर कड़ा इशारा करते हुए दिखाई देते हैं । पौराणिक कथाओं के द्वारा यही बताने का प्रयास करते है कि मनुष्य को अपने कर्तव्य तथा वचनए जिम्मेदारी से कभी विमुख होकर पीछे नहीं हटना चाहिए । बल्कि अपने मार्ग पर हमेशा डटे रहना चाहिए। इसी में उसका हितए उसका कल्याण निहित होता हैं । इसी उद्देश्य से श्रश्मिरथीश की रचना की है ।

दिनकर जी श्हिमालयश कविता में सांस्कृतिक भव्यता तत्कालीन भारतीय दयनीय अवस्था का अंकन बड़ी कुशलता और सटीक एवं मार्मिकता के साथ करते है । कवि श्हिमालयश को श्मेरी जननी के हिम.किरीटश का सम्बोधन कर भारतमाता के धवल मुकुट की कल्पना सार्थक करते है .

साकारए दिव्यए गौरव विराट
पौरुष के पूंजीभूत ज्वाल ।
मेरी जननी के हिम. किरीट ।
मेरे भारत के दिव्य भाल ।
मेरे नगपति । मेरे विशाल । 7

दिनकर जी ने श्हिमालयश कविता के द्वारा निहित हमारी सांस्कृतिक अस्मिता को जगाया । वही श्बुद्धदेवश कविता के द्वारा दिनकर जी समाज में फैलते धर्म की पाखंडता और सभ्यता के नाम परए उसकी आड़ में होनेवाले अत्याचार पर आक्रोश व्यक्त करते हुए कहते हैं.

आह । सभ्यता के प्रांगण में आज गरल.वर्षण कैसा !
घृणा सिखा निर्वाण दिलाने वाला यह दर्शन कैसा !
स्मृतियों का अंधेर । शास्त्र का दम्भा तर्क का छल कैसा !
दीन.दुखी असहाय जनों पर अत्याचार प्रबल कैसा ।। 8

श्दिनकरश कहते है किए भगवान बुद्ध तो स्वयं करुणा के सागर थे लेकिन आज हम उनका सन्देश भूलकर मंदिर. मठादि में पाखंड.लीला करके अपनी भव्य संस्कृति को लज्जित करते है। उसी प्रकार दिनकर ने श्उर्वशीश में रम्भा.मेनका संवाद द्वारा माता की महानताए त्याग पुत्र.पालन की सहजता और उससे प्राप्त होनेवाला सात्विक

आनंद की अनुभूति ही भारतीय संस्कृति का प्राण तत्व माना हैं ट कुरुक्षेत्र में महाभारत में द्रौपदी के चीरहरण प्रसंग को पूरे मानव समुदाय की संस्कृति को कलंक कथा बतायाए जैसे .

क्लीव.सा देखट लिया लज्जा.हरण निज नारी काए
द्रौपदी के साथ ही लज्जा हरी थी जा रही
उस बड़े समुदाय की जो पाण्डवों के साथ था ट 9

समृद्धि.सुख की लालसा एवं वैभव के पीछे मानव संस्कृति का कैसे न्हास होता जाता हैए उसका उत्कृष्ट उदाहरण हैट श्मानवतावादश् अपने विश्व.कल्याणए अहिंसाए प्रेमए समानता एवं विश्वबंधुत्व का भाव बनाए रखता है ट कवि दिनकर के श्कुरुक्षेत्रश् में इसी श्मानवतावादश् का स्वर चारों ओर गूँजता सुनाई पड़ता है ट जैसे द्वितीय सर्ग में युधिष्ठिर पितामह के सन्मुख अपने मन की व्यथाए मन की शंकाओं को रखते हुए स्पष्टता कहते है किए उन्हें दुःख होता हैए पश्चाताप होता हैए यदि महाभारत के इस भयंकर परिणाम से वह पहले से भलीभाँति परिचित होते तो शायद कभी युद्ध न करता.

जानता कहीं जो परिणाम महाभारत काए
तन.बल छोड़ मैं मनोबल से लड़ताय
तप सेए सहिष्णुता सेए त्याग सेए सुयोधन को
जीतए नई नींव इतिहास की मैं धरता ट
और कहीं वज्र गलता न मेरी आह से जोए
मेरे तप से नहीं सुयोधन सुधरता य
तो भी हायए यह रक्त.पात नहीं करता मैंए
भाइयों के संग कहीं भीख माँग मारता ट 10

इसी मानवतावादी दृष्टिकोण को लेकर आगे तृतीय सर्ग में पितामह इस मानवतावादी दृष्टिकोण को और भी स्पष्टता एवं शक्ति से व्यंजित करते हैं.

मैं भी सोचताए जगत से
कैसे उठे जिघांसाए
किस प्रकार फैले पृथी पर
करुणाए प्रेमए अहिंसा ट
जियें मनुज किस भाँति परस्पर
होकर भाई.भाईए
कैसे रुके प्रदाह क्रोध काए
कैसे रुके लड़ाई ट
पृथ्वी हो साम्राज्य स्नेह काए
जीवन स्निग्धए सरल होए
मनुज.प्रकृति से विदा सदा को
दाहक द्वेष.गरल हो ट 11

इससे तात्पर्य यही है किए कुरुक्षेत्र में जो चिंतन पितामह का है वह निश्चित ही मानवतावादी दृष्टिकोण से परिपूर्ण हैंट और सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि दिनकर जी ने पितामह द्वारा अहिंसा का समर्थन किया ट अहिंसा के रूप को उभाराए जिसका मुख्य उद्देश्य मानव कल्याण हो सके ट जहाँ मानव कल्याण के लिए युद्ध अनिवार्य हो जाता हैए वहाँ उन्होंने अत्याचार को मिटाने तथा सत्य को शाश्वत रखने के लिए युद्ध की आवश्यकता की बात की ट

श्रामधारी सिंहश् दिनकर राष्ट्रीय कवि या राष्ट्र के कवि के रूप में स्वयं सिद्ध हैए राष्ट्रीयता के सन्दर्भ में कहां जाय तो **ष्राष्ट्रीयता कोई एक भौगोलिक परिवृत्त नहीं है ट वह एक गतिशील प्रवाह है जो उस भौगोलिक परिवृत्त को अर्थवान बनाता है ट वह एक चेतन समूह का कमाया हुआ रस है जो जड़ तत्वों को एक सार्थक व्यक्तित्व देता है ट साहित्यकार राष्ट्रीयता को इसी रूप में स्वीकार करता हैं ट 12**

इसलिए राष्ट्र के प्रति बौद्धिक चिंतन एवं रागात्मक वृत्ति को ही हम दिनकर की राष्ट्रीयता के स्वरूप में आकलित और संकलित करते हैं। रामधारी सिंह श्दिनकरश क्रांति द्दष्टा रहे हैए उनकी प्रामाणिक प्रतीति तो इतनी व्यापक है किए कवि को सारा सौर.मण्डल ही ज्योति ज्वलित लगता है ।

ज्योतधर कवि मैं ज्वलित सौर.मण्डल काए
मेरा शिखण्ड अरुणाभए किरीट अनल का ।
रथ में प्रकाश के अश्व जुते है मेरे
किरणों में उज्ज्वल गीत गुँथे है मेरे । 13

जैसे उसने अग्नि किरीट पहन रखा हैए जिससे वह विजयपथ में अग्रसर होते है ।

भारतीय जनमानस की भावनाओं को उनकी परंपरागत राष्ट्रीय भावना को नए युग में पूरी शक्ति के साथ प्रतिध्वनित करनेवाले तथा बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न कवि रामधारी सिंह श्दिनकरश छायावादोत्तर हिन्दी कविता के प्रमुख हस्ताक्षरए महत्वपूर्ण कड़ी एवं अग्रगण्यए गणमान्य कवि तथा राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा के कवि रहें है। दिनकर ने अपनी रचनाओं में अपनी विद्रोह शील मनोवृत्ति और सौंदर्य चेतना को वाणी देने के अलावा अन्य प्रवृत्तियों को भी अभिव्यक्ति प्रदान की है । **ष्उनका काव्य भावोत्तोजकए विचारोत्तोजक एवं सौंदर्यबोध के नये आयामों को उद्घाटित करनेवाला । तीसरे दशक के आगे तक फैली इनकी कविताओं में युग.जीवन का स्वर गुंजरित होता रहा है ष 14**

रामधारी सिंह श्दिनकरश जी का समग्र साहित्य हिन्दी जगत के लिए एक अनुपम धरोहरए विशेष एवं महत्वपूर्ण उपलब्धि रही है। श्दिनकरश जी भारतीय नवजागरण के उद्घोषक है । उन्होंने अपने इस महनतम साहित्य द्वारा जनमानस में नवचेतनाए उत्साह निर्माण किया जिसकी फलश्रुति लोग देश की गरिमा और उसके अस्तित्व की रक्षा हेतु अपना सर्वस्व समर्पित करने के लिए शुद्ध भावनाओं से ओतप्रोत तैयार हो गये।

स्वातंत्र्य उमंगों की तरंगए नर में गौरव की ज्वाला है
स्वातंत्र्य रूह की ग्रीवा में अनमोल विजय की माला है
स्वातंत्र्य भाव नर का अदम्यए वह जो चाहे कर सकता हैए
शासन की कौन बिसातए पाँव विधि की लिपि पर धर सकता है।15

कवि अपनी रचनाओं के माध्यम से संदेश देना चाहता है किए अहंकार और अज्ञानता वश में मानवता को कदापि नहीं भूलना चाहिएए क्योंकि मानवीय गुणों से हीन मनुष्यए मनुष्य जैसा जीवन नहीं जी सकता । कवि दिनकर निराशा में भी आशा का संचार करने वाले कवि रहे है। उनके अनुसार दुनिया का ऐसा कोई कार्य नहीं जो संभव न हो। जिसे पूर्ण न किया जा सके। उनका हृदय बहुत विशाल थाए एवं उनके विचार बहुत उच्च कोटि के थे। उनका स्पष्ट मानना था किए किसी गरीबए असहाय व्यक्ति पर अत्याचार करना किसी भी प्रकार से महानता नहीं होती। जो लोग सामर्थ्यशाली हैए शक्तिशाली है उन्हें हमेशा कमजोर लोगों पर दया करनी चाहिए।

क्षमा शोभती उस भुजंग को
जिसके पास गरल हो।
उसको क्या जो दंतहीन विष
रहित विनीत सरल हो। 16

उनके अनुसार व्यक्ति अपने अथक परिश्रम से असंभव को संभव करके दिखला सकता हैं। बशर्ते उसमें वह जज्बाए वह जूनून और दृढ़ विश्वास होना चाहिए । कवि मनुष्य को उत्साहित करते हुए कहता है किए यदि तुम परिश्रम करते हो तो निश्चित ही ईश्वर तुम्हारी सहायता करता है।

दिशा दीप्त हो उठी प्राप्त कर पुण्य प्रकाश तुम्हाराए
लिखा जा चुका अनल.अक्षरों में इतिहास तुम्हारा।
जिस मिट्टी ने लहू पियाए वह फूल खिलाएगी हीय
अंबर पर घन बन छाएगा ही उच्छवास तुम्हारा।
और अधिक ले जाँचए देवता इतना क्रूर नहीं हैए
थककर बैठ गए क्या भाई ! मंजिल दूर नहीं है। 17

निष्कर्ष रू.

जब हम इस महान एवं अद्वितीय साहित्यकार तथा राष्ट्र के कवि श्दिनकरश् का समग्र साहित्य का अवलोकन करते है तो यह स्पष्ट हो जाता है किए वह एक बहुमुखी प्रतिभा के कलाकार थेे उनका समग्र साहित्य उच्च कोटि एवं मानवीयता तथा राष्ट्रीयता से ओतप्रोत रहा हैे उन्होंने अपनी ओजमयी एवं प्रभावशाली रचनाओं के माध्यम से केवल हिन्दी जगत में ही नहीं बल्कि यथार्थ परक रचनाओं के कारण यथार्थ के धरातल पर भी उनकी रचनाए अपना प्रभाव सिद्ध कर चुकी हैंे उनकी इसी अनूठी शैली से वे आज भी याद किये जाते हैे हिन्दी साहित्य का यह क्रांतिकारी कवि ने अपनी विशिष्ठ रचनाओं के घोष से समाज में व्याप्त भ्रष्टाचारए अनाचारए अत्याचार एवं शोषण को समाप्त कर सबके लिए विकास का मार्ग प्रशस्त करने का जो स्वप्न लेकर रचना.संसार में पदार्पण किया थाए वह पवित्र उद्देश्य पूर्ण हुआे

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. प्रा मुकेशकुमार कांजिया. साहित्य और समाजए अमर पब्लिकेशन 3। द्य119 ष्ळज फ्लोरए आवास विकासए हंसपुरमए कानपुर.208021एसंस्करण.प्रथमए2013ए प्ैठछरू978.81.927154.5.2ए पृण्सं.128
2. वहीं . 130
3. वहीं . 130
4. वहीं . 130
5. संण्प्राण्केण् एमण् मायावंशी प्राण्मीना पटेल. चिन्तन प्रकाशन 3। द्य119 ष्ळज फ्लोरए आवास विकासए हंसपुरमए कानपुर.208021ए संस्करण.प्रथमए2011ए प्ैठछरू978.81.88571.42.0ए पृण्सं.52
6. वहीं .54
7. वहीं .59
8. वहीं .60
9. वहीं .61
10. डॉण्मोहसिन ख़ान. दिनकर का कुरुक्षेत्र और मानवतावादएअमन प्रकाशन 104 ।द्य118 रामबागए कानपुर. 208021ए संस्करण.प्रथमए 2012ए प्ैठछरू978.93.80417.55.4ए पृण्सं.93
11. वहीं .94
12. डॉण् गिरीश चन्द्र पाल.रामधारी सिंह दिनकर का काव्य एक अनुशीलनए साधना प्रकाशन 60 बीए राजीव विहारए चंदीपुरवा रोड नौबस्ताए कानपुर.208021ए संस्करण. प्रथमए 2010ए प्ैठछरू978.81.909271.2.3ए पृण्सं.168
13. वहीं .176
14. डॉण् सुरैया शेख.हिन्दी साहित्य और साहित्यिक विमर्शए विनय प्रकाशन 3 ।द्य128एहंसपुरमए कानपुर.208021ए संस्करण.प्रथमए201ए प्ैठछरू978.81.89187.21.7एपृण्सं.108
15. डॉण्विजय प्रकाश मिश्र.हिन्दी के प्रतिनिधि कविएविद्या प्रकाशन सी.449ए गुजैनीए कानपुर.22ए संस्करण. द्वितीय 2011ए प्ैठछ रू 81.88554.96.0एपृण्सं. 189
16. वहीं .191
17. वहीं .192